फाववाद / "जंगलवाद"
'Fauvism'
1905 – 1908

बीसवीं शताब्दी में विभिन्न प्रयोगों द्वारा अनेक शैलियों का जन्म हुआ और कुछ समय चल कर वे समाप्त हो गई। प्रयोगों द्वारा नवीन शैलियों का निर्माण करना बीसवीं शताब्दी के कलाकारों का शायद धर्म हो गया था एवं इसी कारण कुछ समीक्षक बीसवीं शताब्दी की कला को निंदाजनक अर्थ में 'प्रयोगवादी' कहते हैं।

'फाववाद' कोई विशिष्ठ शैली नहीं थी; घनवाद, प्रभाववाद या अतियथार्थवाद के समान, उसके कोई सिद्धान्त नहीं थे। संयोगवश मातिस को फाववाद का नेतृत्व करना पड़ा क्योंकि उसके सभी अनुयायियों की कला मुख्यतया प्रतिक्रियात्मक थी। वे प्रभाववाद के प्रकाश, नैसर्गिकता व नाबि कला की आलंकारिकता से मुक्त होना चाहते थे। वे चाहते थे कि कलाकृति पूर्णरूप से कलाकार के व्यक्तित्व की सच्ची प्रतिमा हो। शैली के विचार से फाव चित्रकारों में कोई समानता नहीं थी इससे उनकी अंकनपद्धतियों की भिन्नताएं स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। संक्षेप में फाववाद एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण मात्र था, कोई सिद्धांतिक शैली नहीं।

19वीं शताब्दी के अन्त में वान गो, गोगँ व सेजान की जो प्रदर्शनियां हुई उनसे फॉव चित्रकारों को काफी प्रेरणा मिली। 1905 में सलो दोतान में मातिस के नेतृत्व में नये कलाकारों के एक समूह ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी की। इन कलाकारों में मातिस, मार्क्वे, रुओ, देरें, व्लामिंक, फ्रिस, वान डोन्जेन, गोगँ व वालता थे। प्रदर्शनी के चित्र मुख्य

में इन कलाकारों के चित्र रखे गये थे उसी कक्ष में मूर्तिकार मारवे की 15वीं शताब्दी की शैली में बनाई एक मूर्ति थी। नये कलाकारों के चित्र बिल्कुल ही अनोखे ढंग से बनाये गये थे एवं उनके बीच मारवे की प्राचीन शैली की मूर्ति अजीब सी दिखाई दे रही थी। इस विरोध को देखकर कला-समीक्षक वोक्सेल ने कहा, "देखो जंगली जानवरों के बीच दोनातेलो"। दोनातेलो एक प्रसिद्ध प्राचीन मूर्तिकार थे। अब ये नये कलाकार फाव या जंगली जानवर के नाम से प्रसिद्ध हुए। नाबि चित्रकारों के नेता सेरूसिय ने आश्चर्य से लिखा, "चित्रकारों का एक नया मंडल अग्रसर हो रहा है। ये चित्रकार अपनी भावनाओं को विशुद्ध रंगों द्वारा व्यक्त करना चाहते हैं। इनके चित्र अच्छे नहीं हैं, किन्तु जिस दिशा में ये खोज रहे हैं, उसको देखते हुए मुझको विश्वास है कि ये भविष्य में जरूर सफल होंगे।" जे० बी० हॉल ने भी प्रदर्शनी की निम्न शब्दों में आलोचना की, "दृष्टि-दोष-पूर्ण-चित्रण, रंगों का पागलपन, मनमौज ....।

फाव चित्रकारों के चित्रों के विषय अधिकतर समुद्रिकिनारे, सार्वजनिक स्थान, समारोह व पर्यटन स्थलों के दृश्य थे, जिनमें उनको चमकीले रंगों का प्रयोग व गतिपूर्ण चित्रण करने का मौका मिला। फाव रंगों की चमक, तूलिकासंचालन का आवेश व रेखाओं की अनोखी ऐंठन को दर्शकों ने पहचाना जरूर किन्तु फाव चित्रकारों को समझना उनके लिए मुश्किल था।

फाव चित्रकार आकारों को अधिक से अधिक सरलीकृत रूप देकर समतल चमकीले रंगों द्वारा भाव अभिव्यक्त करना चाहते थे, किन्तु आकारों के सरलीकरण से उन्होंने रंगों के चमकीलेपन पर अधिक बल दिया। वे सीधे ट्यूब से रंगों को निकाल कर पट पर लगाते। कुछ फाव चित्रकारों ने स्यूरा के बिन्दुवादी अंकन पद्धति का प्रयोग किया यद्यपि वे बिन्दुवाद के प्रकाश व वातावरण सम्बन्धी सिद्धान्तों से असहमत थे। नयी रंगांकन-पद्धति को अपनाते ही उनको प्रभाववाद व बिन्दुवाद सम्बन्धि कुछ नियमों को त्यागना पड़ा जैसे कि रेखीय व वातावरणीय दूर दृश्य लघुता, घनत्व का आभास, बारीकियों का अंकन इत्यादि।

फाववाद की 1905 में हुई प्रथम प्रदर्शिनी के दो साल के अन्दर ही उसका आरम्भिक जोश समाप्त सा हो गया. फाववाद के सभी चित्रकार अपने व्यक्तित्व के अनुकूल, निजी शैली को विकास करने में व्यस्त हो गये। 1906 में आयोजित फाववादियों की दूसरी प्रदर्शिनी में ही परिवर्तन के प्रमाण स्पष्ट रूप से दिखाई दिये। फाववाद में पूर्वनियोजित विचारों का आधार नहीं था अतः फाव चित्रकारों को यकीन हुआ कि केवल इन्द्रियजनित आनन्द कला का आधार नहीं हो सकता, कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए विचार का होना अनिवार्य है। 1908 के पश्चात् फाव चित्रकारों ने व्यक्तिगत विचारों के अनुकूल भिन्न दिशाएं अपनाईं।

- डॉ० वन्दना वर्मा
चित्रकला विभाग

Scanned with CamScanner